SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

संस्कृत वाङ्मय में शतककाव्य– एक परिचय

सुधीर कुमार, (Ph.D.), संस्कृत विभाग
पंडित महादेव शुक्ल कृषक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गौर, बस्ती, उत्तर प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुधीर कुमार (Ph.D.)

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 04/05/2023
Revised on : -----
Accepted on : 11/05/2023
Plagiarism : 05% on 04/05/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 5%
Date: May 4, 2023
Statistics: 156 words Plagiarized / 2963 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

शोध सार

प्राचीन काल से लेकर अद्यतन शतक काव्यों में अनेक रूपों में भावों की अभिव्यक्ति हुई है। इन शतक काव्यों का मूल उद्गम स्रोत वैदिक ऋषियों की तपस्या तथा देवार्चना ही है। शतक हमारी वैदिक परंपरा में पूर्णता का प्रतीक है। ''जीवेम शारदः शतम्.'' आत्मा की पूर्णता तथा कल्याण से युक्त है। इसी भाव से अनुप्राणित होकर भारतीय कवि को भी स्वानुभूति शतक काव्य के रूप में प्रकट हुई। छठी एवं सातवीं शताब्दी से लेकर 16 वीं शताब्दी तक के संस्कृत मुक्तक संग्रहों से ज्ञात होता है कि संस्कृत साहित्य में शतक काव्य लिखने की परंपरा या परिपाटी अधिक थी, जो प्रथम शती ईसवी की प्राकृत् भाषा में महाकवि हाल विरचित 'गाहासतसई' से लेकर 21वीं सदी के पूर्वार्द्ध में प्रोफेसर रसिक बिहारी जोशी कृत 'राधा पंचशती' तथा अनेकानेक शतक काव्य अद्यतन उपलब्ध हैं। लौकिक संस्कृत मुक्तक काव्यों का प्रारंभ शतक काव्य से ही होता है, जो 100 से लेकर 700 तक श्लोकों से युक्त शतक काव्य, त्रिंशती, पंचशती, सप्तशती संज्ञक काव्य के रूप में मिलते हैं। संस्कृत भाषा में कुछ ऐसे छोटे–बड़े काव्य मिलते हैं जिनका विषय श्रृंगार, नीति, भक्ति, वैराग्य आदि हैं और जिनमें आत्माभिव्यंजन की प्रधानता है, विषय वर्णन का नहीं। इन कार्यों को पाश्चात्य विद्वानों ने शतक काव्य, गीतिकाव्य, या 'लिरिक' कहा है। यूरोप में शोक, प्रेम आदि मार्मिक भावों की अभिव्यक्ति करने वाली गीती प्रधान कविताओं को लिरिक कहा जाता है। अन्य सभी रचनाओं की अपेक्षा इन शतक काव्यों में प्रभावोत्पादकता अधिक होती है। जीवन के किसी एक ही मार्मिक पक्ष का इनमें निरूपण होता है किंतु साधारणीकरण अत्यधिक त्वरा के साथ होता है कि श्रोता तत्काल आनंद लोक में विचरण करने लगता है।

मुख्य शब्द

शतककाव्य, लिरिक, स्तोत्र काव्य, श्रृंगारिक काव्य, भर्तृहरि का शतकत्रय, अमरु शतक.

शतक काव्य और संस्कृत साहित्य

मुक्तक काव्य के प्रति संस्कृत काव्यशास्त्रियों का मतभेद रहा है। वामन ने अनिबद्ध काव्य के प्रति अरुचि दिखाई है– 'नानिबद्धम् चकास्त्येकतेजः परमाणुवत्' (काव्यालंकारसूत्र –1/3/29) अर्थात् जैसे अग्नि का एक परमाणु प्रकाशित नहीं होता, वैसे ही मुक्तक काव्य प्रकाश नहीं पाता है। उन्होंने उद्धरण भी दिया है– 'असंकलितरुपाणां काव्यानां नास्ति चारुता'। वहीं दूसरी ओर आनंदवर्धन इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि शतक काव्यों में भी प्रबंध काव्य के समान, रस का निवेश करने वाले कवि होते हैं– 'मुक्तकेषु प्रबंधेष्विव रसबन्धाभिनिवेशिनः कवयो दृष्यन्ते' (ध्वन्यालोक 3/7 की वृत्ति)। अग्नि पुराण भी इस तथ्य का समर्थक है– 'मुक्तकम् श्लोक एवैकचमत्कारक्षमः सताम्' (337/36)।

शतककाव्य काव्य का एक प्रकार है जिसमें कवि अपने अंतरंग में स्थित कोमल भावों में से किसी एक को केंद्र में रखकर कल्पना शक्ति के द्वारा उसे गेय बनाकर संक्षिप्त रूप में प्रकट करता है। हृदय में स्थित भाव का अतिरेक होने पर ही शतक काव्य की अभिव्यक्ति होती है। ऐसी रचना निर्मित की नहीं जाती, बल्कि इसकी स्वतः स्फूर्ति होती है। कवि का हृदय सुख–दुख या किसी धार्मिक नैतिक भावना से उद्वेलित होकर सहसा काव्य के रूप में फूट पड़ता है। चिरकाल से उसकी संजोई हुई कल्पना प्रवाहित होने लगती है तथा गेय छंदों या रागों में मृदु शब्द निर्गत होने लगते हैं। गीतिकाव्य के द्वारा जब कोई अपने हार्दिक आवेगों को पारगम्य में बना देता है तो उसे आनंद की अनुभूति होती है इसलिए आधुनिक विद्वानों ने गीतिकाव्य के तीन प्रमुख तत्व माने हैं–भावातिरेक, कल्पना और संगीत। जहां तक भावातिरेक का संबंध है वह किसी कोमल भाव का ही हो, रौद्र भाव का नहीं। प्रेम, शोक, भक्ति, नीति, वैराग्य आदि की भावनाएं संस्कृत भाषा की गीतियों का विषय रही हैं। वैसे तो कवि और रसास्वाद लेने वाले के विषय में कहा गया है कि संसार के सभी विषयों को उनके द्वारा उद्भावित किया जा सकता है जिससे वे विषय रस और भाव का रूप ले लेते हैं, किंतु गीत काव्य में सभी विषय नहीं हो सकते। केवल कोमल भावों का अतिरेक ही इनमें आवेग पूर्वक स्फुरित होता है।

सीमितता भी गीतिकाव्य का प्रमुख लक्षण है। आवेग को विस्तार प्रदान करने से एक ही भाव की आवृत्ति होने लगती है, नीरसता छा जाती है इसीलिए गीतकाव्य प्रबंध– काव्यों का विस्तार नहीं पा सकते। कभी अपने आवेग को अत्यंत संक्षेप में व्यक्त करता है, तभी वह गीतिकाव्य हो सकता है। इस संक्षिप्त रूप के बल पर काव्य का साधारणीकरण होता है–कवि की आत्मनिष्ठ अनुभूति जन–जन में पहुंच जाती है, प्रत्येक पाठक उसे अपनी अनुभूति मान लेता है अंत में गेयात्मकता का भी स्थान है। आरंभ में यही तत्व प्रधान था जैसा कि इस काव्य प्रकार के नाम से पता चलता है। गेयात्मकता होने पर ही किसी काव्य को गीति ही कह सकते हैं। संस्कृत के कुछ छन्दों में गान तत्व अधिक है, इसलिए कवियों ने इन छन्दों को गीतिकाव्य में निविष्ट किया है। जयदेव जैसे कवियों ने शुद्ध संगीतमय रागों का ही प्रयोग किया है। संक्षेप में गीत काव्य का यह लक्षण दिया जा सकता है:–

भावानामात्मनिष्ठानां कल्पनावालितं लघु।
स्फउरणं गेयरूपेण गीतकाव्यम् निगद्यते।।

नामकरण पद्धति

संस्कृत साहित्य में शतक काव्यों के नामकरण की कई पद्धतियां विकसित हुई यथाः

1. देवी–देवताओं की स्तुति के आधार पर नामकरण–दुर्गा सप्तशती, वेदांत देशिक कृत अच्युति शतक, बाणभट्ट कृत् चंडी शतक, प्रोफेसर रसिक बिहारी जोशी कृत् राधा पंचशती, मयूर कृत् सूर्य शतक आदि।
2. संस्कृत में कुछ शतकों का नामकरण सामाजिक विषयों को लक्ष्य करके किया गया है जैसे– विश्वेश्वर पांडे कृत् होलिका शतक, वरद कृष्णमाचार्य कृत् विधवा शतक आदि।

3. मुक्तक काव्यों में अधिकांश का प्रतिपाद्य विषय श्रृंगार रहा है इस कारण नारी के सौंदर्य परक अंगों के आधार पर भी कुछ का नामकरण हुआ है। जैसेः वरद कृष्णमाचार्य का कच शतक, विद्या सुंदर कृत् रोमावली शतक आदि।
4. कतिपय शतक रचयिताओं ने छंदों के आधार पर नामकरण किया जैसे विश्वेश्वर पांडे कृत् आर्य शतक, गोवर्धनाचार्य कृत् आर्या सप्तशती।
5. कतिपय शतक रचयिताओं ने उपर्युक्त नामकरण परंपरा को छोड़कर अपने नाम पर ही काव्य का सृजन किया है, जैसेः अमरु शतक, मयूर शतक, भल्लट शतक।
6. आधुनिक शतक रचयिताओं में अधिकांश ने अपने आराध्य देवी देवता या अमानवीय नायक–नायिका के नाम पर शतक काव्य का सृजन किया, जैसेः प्रोफेसर रसिक बिहारी जोशी कृत् राधा पंचशती, सोमेश्वर कृत् राम शतक आदि।

इस प्रकार मुक्तक काव्यों में श्रृंगार नीति एवं वैराग्य चित्रण की एक विस्तृत परंपरा विद्यमान रही है और प्रायः इसी आधार पर उनके नामकरण का विभिन्न पद्धतियों का स्पष्टीकरण हो जाता है।

सर्वाधिक ध्यातव्य तथ्य यह है कि मुक्तक काव्य के रूप में हमें सर्वप्रथम शतकतत्रय के प्रणेता भर्तृहरि तथा अमरु शतक के रचयिता अमरूक का नाम लेना पड़ता है। भर्तृहरि और अमरुक ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोक जीवन की अनेक विधाओं की झांकी प्रस्तुत किया है। इन शतकों के छंदों को काव्यशास्त्रिय लक्षण ग्रंथों में भी उद्धृत किया गया है। मम्मट जैसे साहित्य मर्मज्ञ ने अपने काव्यप्रकाश में इनके छंदों को उद्धृत किया है। भाव प्रवणता एवं रस चर्वणा की दृष्टि से अमरुक कवि ने प्रबंध काव्यों को भी पीछे छोड़ दिया है। एक सौ श्लोकों से युक्त संस्कृत शतक काव्य की रचना धर्मिता में जैन आचार्य विद्यासागर जी महाराज कृत् श्रमण शतकम्, भावना शतकम्, निरंजन शतकम् आदि। त्रिंशती संज्ञक काव्यों में सोमेश्वर की श्रीकंठत्रिंशती, सोमराज दीक्षित तथा ब्रजराज की आर्या त्रिंशती उल्लेखनीय है।

उक्त श्रेणियों को विषय वस्तु के आधार पर दो रूपों में अध्यन किया जा सकता हैः

1. स्तोत्र शतक काव्य।
2. श्रृंगारिक शतक काव्य।

1. स्तोत्र शतक काव्य

धार्मिक शतकों का प्रतिपाद्य विषय दिव्य देवताओं की स्तुतियां हैं। कवियों ने अपने तथा लौकिक कल्याण के भाव से ओतप्रोत होकर देवविशेष को आधार बनाकर उन्हीं के यशोगान में मुक्तक पदों में सुंदर रसपेशल भाव व्यक्त किए। यही स्रोत साहित्य ही स्तोत्र साहित्य के नाम से प्रसिद्ध है। समस्त वैदिक संहिताएं देवताओं की विशिष्ट स्तुतियों से परिपूर्ण है।

पुष्पदंत का शिवमहिम्नः स्तोत्र

भगवान शिव की महिमा का वर्णन विशद् रूप में करने वाला पुष्पदंत का यह स्तोत्र ग्रंथ शिव भक्तों में बहुत ही लोकप्रिय है। इसके श्लोक मुख्यतः शिखरिणी छंद में रचे गए हैं। वर्तमान में उपलब्ध इसकी प्रतियों में यद्यपि 40 पद्य तक मिलते हैं, किंतु इसकी उत्कृष्ट व्याख्या करने वाले मधुसूदन सरस्वती ने आदि के केवल 32 पद्यों पर ही अपनी टीका की है।

शिव की महिमा की स्तुति परक ग्रंथ की रचना करने वाले कवि पुष्पदंत को कश्मीर का निवासी कहा जाता है और उनका आविर्भाव काल नवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है, जबकि कुछ के द्वारा इनका अस्तित्व काल 400 ईसवी के आसपास भी स्वीकार किया जाता है।

मयूर भट्ट रचित सूर्य शतक

स्रग्धरा छंद में रचा गया मयूर भट्ट कवि का सूर्य शतक इस छंद में रचा गया निर्मित आदि स्तोत्र काव्य माना

जाता है। मयूर भट्ट को बाणभट्ट का निकटतम संबंधी कहा जाता है। सूर्य शतक में जिन 100 पद्यों को छंदोबद्ध किया गया है, कहा जाता है कि वह मयूर भट्ट द्वारा स्वयं के असाध्य रोग से निवारण हेतु सूर्य भगवान की स्तुति के रूप में किए गए थे। इस किवदंती का समर्थन मम्मट ने काव्यप्रकाश में किया है।

बाणभट्ट का चंडी शतक

महाकवि बाणभट्ट ने भगवती दुर्गा की स्तुति अपने चंडी शतक नाम स्तोत्रकाव्य में स्रग्धरा छंद में विलसित 100 पद्यों में किया है। बाणभट्ट ने मयूर भट्ट की शैली को ही आधार में रखकर इस विशालकाय काव्य की रचना अनुप्रास युक्त शब्द सौष्ठव, दीर्घ समास, कठिन श्लेष अलंकार तथा जटिल वाक्य विन्यास में की है।

ऐसी किवदंती है कि मयूर भट्ट की भांति बाण द्वारा भी किसी शाप के अवसान हेतु ही स्तुति रूप में रची गई थी। कवि ने इसमें यह वर्णित किया है कि जब मानव सभी ओर से निराश और हताश हो जाता है तो एकमात्र परम शक्ति देवी भगवती की शरण में जाता है और अन्य साधनों के विफल हो जाने पर देवी के अमोघ सहायता का आकांक्षी हो जाता है।

शंकराचार्य के स्तोत्र

शंकराचार्य अद्वैत वेदांत के प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं। इनके नाम से संस्कृत में कई स्तुति काव्य मिलते हैं जिनमें अधिकांश उनकी परंपरा के शंकराचार्य द्वारा रचे गए हैं। चरपट पंजारिका में शंकराचार्य ने जगत की आसक्ति से दूर रहकर कृष्ण के प्रति आदर और भक्ति भाव पर बल दिया है। इस कारण इसे भज गोविंदम भी कहा जाता है क्योंकि इसमें आराधना और सन्यास के महत्व को दिखाया गया है।

वैष्णव स्तोत्र

प्रधानता दक्षिण भारत के कवियों ने विष्णु के स्तोत्र काव्यों की रचना में बहुलता से योगदान किया है। 700 ईसवी के केरल के राजा कुल शेखर ने मुकुंद माला नामक वैष्णव स्तोत्र की रचना की। इसमें भगवान विष्णु की ओजस्वी भाषा में भावपूर्ण आराधना की गई है।

शैव– शाक्त स्तोत्र

इस स्तोत्र परंपरा में सती और भगवान शिव की आराधना की गई है। कश्मीर निवासी रचनाकारों का इस स्तोत्र परंपरा में विशेष योगदान है शक्ति के रूप में शिव की अर्धांगिनी पार्वती की स्तुति भी पर्याप्त पद्यों में मिलती है। कश्मीर निवासी कवि रत्नाकर ने भगवान शिव पार्वती को आधार बनाकर वक्रोक्ति पंचाशिका लिखी थी जिसमें वक्रोक्ति का प्रयोग बड़ा बड़ी कुशलता और पारंगतता के साथ किया गया है। यह 50 पद्यों का सिद्धहस्त स्तोत्र काव्य है।

संस्कृत कवियों ने जहाँ एक ओर स्तोत्र परंपरा को समृद्ध शाली बनाया, वहीं पर आचार्यों के प्रभाव से उन्होंने काव्य के महनीय तथा मान्य प्रयोजन 'कांता सम्मित' उपदेश का समादर किया। शतक काव्यम के माध्यम से भारतीय मनीषियों ने ऐसी उपदेशात्मक तथा नीतिपरक बातों की शिक्षा दी है जो किसी भी भाषा के साहित्य में प्राप्त करना असंभव है। नीति विषयक उपदेशात्मक शतकों का इतिहास भी काफी प्राचीन है। काव्य शास्त्रीय साहित्य शतक के अंतर्गत हम नीति, उपदेश, सुभाषित आदि सभी शतकों का समावेश करके काल क्रमानुसार विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं:

चाणक्य शतक

नीति विषयक उपदेशात्मक शतकों में चाणक्य शतक सबसे प्राचीन है। कतिपय लोग इसे कौटिल्य कृत्य मानते हैं, किंतु यह जीवानंद भट्टाचार्य का 110 श्लोक का शतक है।

अवदान शतक

यह जातकों के ढंग पर संस्कृत में विरचित नीति प्रधान साहित्य है। यह आर्यदेव प्रणीत 400 श्लोकों में विरचित महात्मा बुद्ध एवं उनके व्यापक बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का समावेश है।

भर्तृहरि का शतकत्रय

कवि भर्तृहरि शतक काव्य रचना के आधार स्तंभ के रूप में सुशोभित होते हैं। इनके द्वारा रचित शतकत्रय नीति शतक, श्रृंगार शतक और वैराग्य शतक मुक्तक पद्यों के 100–100 छंदों का संकलन हैं:

1. **नीति शतकः–** इस ग्रंथ में प्रतिपादित सभी नैतिक सिद्धांतों का किसी जाति, वर्ग एवं संप्रदाय से कोई संबंध नहीं है अपितु संपूर्ण मानव जगत् का कल्याण कर मंगलप्रद करने वाला है। अत्यंत सरल भाषा में मानवोचित सद्गुणों का प्रतिपादन कर मानव जगत को शुद्ध विचारों एवं सुभाषितों से आप्लावित करने वाला है।
2. **श्रृंगार शतकः** भर्तृहरि की रचनाएं मानव जीवन की वास्तविक अनुभूतियों पर आधारित होने के कारण सर्वत्र प्रचलित एवं प्रशंसित हैं। यह छंद सभी जनों को आनंदित और लक्षित एवं प्रभावित करने वाली हैं। ग्रंथ का प्रारंभ कवि ने कामदेव को नमस्कार करते हुए किया है।
3. **वैराग्य शतकः** प्रस्तुत ग्रंथ में भर्तृहरि ने कवि हृदय की सरसता का समावेश करते हुए वैराग्य शतक का प्रणयन किया है। इसमें वर्णित छंद जीवन की वास्तविकता एवं व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर वर्णित होने के कारण प्रभावित करते हैं। इस शतक का प्रारंभ शिव की स्तुति से हुआ है।
4. **भल्लट शतकः** कश्मीरी कविवर भल्लर या भल्लट का अन्योक्ति पूर्ण नीतिपरक मुक्तक पदों का यह शतक संग्रह है। इसमें अन्याप्देश और अन्योक्ति के माध्यम से तत्कालीन समाज के उच्च कुलीन वर्गीय किंतु मूर्ख अयोग्य व्यक्तियों का अत्यंत सरल सुबोध हृदयावर्जक शब्दों में व्यंग्य किया गया है।
5. **उद्धव शतकः** इसे उद्धव संदेश भी कहते हैं। 17 वीं सदी के रूप गोस्वामी रचित प्रधान संदेश शतक काव्य हैं। इसमें कृष्ण एवं विरहिणी गोपिकाओं के द्वारा भक्ति तत्व का सरस रुचिर विवरण प्रस्तुत है।

2. श्रृंगारिक शतक काव्य

जिन मान्यताओं का समाज में प्रचलन होता है वे बाद में रूढ़िवादी हो जाया करती हैं। इसी प्रकार बाद में हमारे कवियों में भी यह श्रृंगार शतक रचना की परंपरा रूढ़िवादी बन गई। प्रमुख श्रृंगार शतक काव्य निम्न हैं:

- **भाव शतकः** चौथी सदी ईस्वी के संस्कृत विद्वान शिवभक्त गणपति नाग द्वारा रचित है।
- **प्राकत् गीतिकाव्य (गाथा सप्तशती):** हाल नामक राजा द्वारा मुक्तक पद्यों में रचित 700 श्लोकों का संग्रह है। ग्रामीण जीवन का चरित्र चित्रण और सजीव चित्रांकन इस प्राकृत गीतिकाव्य का मुख्य विषय वस्तु है।
- **अमरु शतकः** आठवीं सदी के कवि अमरुक की श्रृंगार प्रधान रचना है। इसमें नायिकाओं के हाव–भाव का चित्रण, श्रृंगार के संभोग एवं वियोग दोनों पक्षों का निरूपण, मान की विभिन्न अवस्थाओं एवं नायक–नायिका भेद आदि का सम्यक विवेचन है।

गोवर्धन आचार्य की आर्या सप्तशती

राजा हाल द्वारा रचित गाथा सप्तशती को आधार बनाकर बंगाल के राजा लक्ष्मण सेन के सभा पंडित गोवर्धन आचार्य ने आर्या सप्तशती की रचना की। श्रृंगार रस प्रधान मुक्तक पद्य इसमें विकसित होते हैं। आर्या छंद में निबद्ध 700 पद्य इसमें सुशोभित होते हैं। संयोग और विप्रलंभ दोनों ही अवस्थाओं में कामिनियों के अंतस में हिलोरे लेने वाले भावों का सजीव चित्रण कवि ने अपनी लेखनी से किया है। स्त्री हृदय के सूक्ष्माति सूक्ष्म भावों के निरूपण में गोवर्धनाचार्य सिद्धहस्त हैं।

निष्कर्ष

संस्कृत शतक काव्यों का सांगोपांग अध्ययन करने के उपरांत निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानव सृष्टि अनुपम कृति है। ईश्वर ने मानव को संसार के समस्त प्राणियों की तुलना में विशिष्ट गुणों से परिपूर्ण किया है। प्रबुद्ध प्राणी होने के कारण और गुण के आधार पर मानव अपने हित–अहित का चिंतन स्वयं करता है तथा विवेक और बुद्धि के बल पर जो सत्कर्म करता है उसे नैतिक कर्म करते हैं। जहाँ मानव अपने विवेक और बुद्धि को धारण करते हुए भी अन्याय और अधर्म करता है उसे दुर्नीति पूर्ण कर्म कहते हैं। नैतिक कर्म मनुष्य को परम कल्याण की ओर

ले जाते हैं, इसके विपरीत दुर्नीति युक्त कर्म से उसका विनाश हो जाता है। शतक काव्यों के जो विषय वस्तु हैं वे मानव को दानव बनने से रोकता है तथा अनुचित मार्ग से उचित मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। कहा जा सकता है कि मानव के विनाश और अवनति के जो भी तत्व हैं उन सभी से शतक काव्यों के नीतिशास्त्रिय ज्ञान रक्षा करते हैं।

संदर्भ सूची

1. गैरोला वाचस्पति, *संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास*।
2. विद्यासागर जीवानंद, *काव्य संग्रह भाग –2,* संपादित कोलकाता।
3. कृष्णामाचारियर एम., *क्लासिक संस्कृत लिटरेचर*।
4. उपाध्याय बलदेव, *संस्कृत साहित्य का इतिहास,* page 323 – 375।
5. निर्णय, *काव्य माला गुच्छक,* सागर प्रेस मुंबई।
6. उपाध्याय राम जी, *भर्तृहरि का शतकत्रय,* चौखंबा प्रकाशन वाराणसी।
7. त्रिपाठी श्रीकृष्ण मणि, *शतककाव्य – एक परिचय,* चौखंबा सुरभारती प्रकाशन नई दिल्ली।
8. टीका रमा रंजनी, उपाध्याय पंडित दद्दन, भर्तृहरि शतकतत्रयम्, चौखंबा पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली।
9. त्रिपाठी शिव शंकर, *कवियों की लोक दृष्टि,* चौखंबा पब्लिकेशन बनारस।
10. *काव्यों में नीति तत्व,* गीता प्रेस, गोरखपुर।

****